गुट–निरपेक्ष आन्दोलन में भारत की भूमिका

लालाराम

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान (विद्या सम्बल योजना)
राजकीय महाविद्यालय, फतेहगढ़ (जिला जैसलमेर)

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बदलाव लाने में **''गुट–निरपेक्षता''** का विशेष महत्व है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की उत्पति का कारण कोई संयोग मात्र नहीं था, बल्कि यह एक सुविचारित धारणा थी। इसका उद्देश्य नव–स्वतन्त्र राष्ट्रों को साम्राज्यवाद व उप–निवेशवाद से छुटकारा दिलाकर शक्तिशाली राष्ट्रों के गुटों से दूर रखकर उनकी स्वतंत्रता को सुरखित रखना था।

भारत ने गुट–निरपेक्षता को एक नीति के रूप में अपनाकर अपनी विदेश नीति के आधारभूत सिद्धांतों में स्थान दिया तथा एशिया व अफ्रीका के नव–स्वतन्त्र राष्ट्रों को भी इस नीति की ओर आकर्षित किया। इस आन्दोलन में भारत की भूमिका ही केंद्रीय रही। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू को ही इस आन्दोलन का जनक माना जाता है। इस आन्दोलन की वैचारिक व संगठनात्मक पृष्ठभूमि के निर्धारण में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

आजादी के बाद भारत एक अल्प संसाधन उपलब्धता वाला राष्ट्र रह गया था तथा उनके सामने आधारभूत ढांचे को विकसित करने की महत्वपूर्ण चुनौती थी, इस कारण वह विश्व के किसी गुट में शामिल न होकर अपने विकास के रथ को आगे बढ़ाना चाहता था। इस आन्दोलन में भारत की भूमिका स्थैतिक नहीं बल्कि निरन्तर गतिशील थी। भारत विश्व का पहला देश है, जिसने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में इस अवधारणा का प्रतिपादन करके इसके सिद्धांतों की व्याख्या की तथा इसके सिद्धांतों को अपनाने के लिये एशिया, अफ्रीका एवं लैटिन अमरीका के नव–स्वतन्त्र देशों को प्रेरित किया। सन् 1955 में बाण्डुंग सम्मेलन में व्यक्त किए मूल विचारों को सितम्बर 1961 में बेलग्रेड सम्मेलन में और अभिव्यक्ति मिली जब स्वतन्त्रता, शक्ति, न्याय और समानता की ओर बढ़ने के लिये ऐतिहासिक घटनाओं के रूप में गुट–निरपेक्ष आन्दोलन का जन्म हुआ। बेलग्रेड सम्मेलन में पंडित नेहरू ने कहा था, '' हम इसे गुट निरपेक्ष देशों का सम्मेलन कहते है। अब गुट–निरपेक्ष शब्द की भिन्न रूप में व्याख्या की जा सकती है, परन्तु मूलतः इसके अर्थ का प्रयोग विश्व की महाशक्तियों के गुटों से अलग रहने के लिये किया गया है। गुट–निरपेक्षता एक नकारात्मक अर्थ है, परन्तु यदि आप इसे एक सकारात्मक अर्थ दे तो इसका आशय उन राष्ट्रों से है, जो युद्ध के प्रयोजन सैन्य गुटों, सैन्य सन्धियों और इसी प्रकार की अन्य बातों का विरोध करते हैं, इसलिये हम इससे दूर है और हम जिस रूप में भी है, शांति के पक्ष को अपना समर्थन देना चाहते है।''

भारत द्वारा गुट–निरपेक्षता को अपनाने के कारण

1 – किसी भी गुट में शामिल होकर बिना कारण ही भारत विश्व में तनाव पैदा करने को उपर्युक्त नहीं मानता था।
2 – भारत अपने विचार प्रकट करने की स्वाधीनता को बनाए रखना चाहता था। यदि वह किसी विशेष गुट में शामिल हो गया, तो उसे उस विशेष गुट के नेताओं के दृष्टिकोणों को अपनाना पड़ेगा।
3– भारत अपने आर्थिक विकास के लिये सोवियत संघ व अमरीका दोनों से सहायता लेना चाहता था।
4 – भारत की भौगोलिक स्थिति भी गुट–निरपेक्षता को अपनाने के लिये बाध्य करती है। साम्यवादी देशों से हमारी सीमाएं टकराती है। अतः पश्चिमी देशों के साथ गुटबन्दी करना विवेक सम्मत नहीं था।

भारतीय गुट–निरपेक्षता के चरण

1 – 1947 से 1950 तक – प्रारंभिक वर्षो में गुट–निरपेक्षता की भारतीय नीति अस्पष्ट थी। नेहरू स्वयं इसे ''सकारात्मक तटस्थता'' कहकर पुकारते थे। इस काल में भारत की प्रवृत्ति पश्चिमी गुट की तरफ झुकी हुई थीं

2 – 1950 से 1957 तक – 1953 में स्टालिन की मृत्यु के बाद सोवियत संघ का भारत के प्रति दृष्टिकोण उदार हो गया। इस काल में अमरीका से संबंधों में कटुता आने लगी। क्यों कि 1954 में अमरीका ने एक संधि के तहत पाकिस्तान को विशाल पैमाने पर शस्त्र देने का निर्णय लिया। गोवा के प्रश्न पर अमरीका ने पुर्तगाल का समर्थन किया।

3 – 1957 से 1962 तक – 1957 के आम चुनाव में केरल में साम्यवादियों की विजय हुई। भारत में इस समय गंभीर आर्थिक संकट था, इस कारण भारत को पश्चिमी गुट की तरफ झुकना पड़ा तथा पंडित नेहरू ने अमरीका की सद्भावना यात्रा की।

4– 1962 – चीनी आक्रमण तथा भारतीय गुट–निरपेक्षता – पंचशील समझौते के कारण हमने देश की प्रतिरक्षा के लिये कोई विशेष प्रयास नहीं किए और न ही हम किसी एक गुट में शामिल हुए । परिणामस्वरूप चीन द्वारा विश्वासघाती हमला किया गया।

5 – 1965– भारत पाक युद्ध और गुट–निरपेक्षता – इस युद्ध के कारण अमरीका ने भारत व पाकिस्तान दोनों पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिये। इससे स्पष्ट हो गया कि किसी भी गुट में शामिल होने से कोई लाभ नहीं होने वाला है।

6 – 1977 से 1979 असली गुट–निरपेक्षता – जनता पार्टी के घोषणा पत्र में असली गुट–निरपेक्षता की बात कही गई थी। मोरारजी देसाई ने कहा कि इंदिरा गांधी के जमाने में विदेश नीति एक तरफ झुक गई थी। इस झुकाव से दूर करना ही असली गुट–निरपेक्षता है। विदेश मंत्री वाजपेयी के शब्दो में ''भारत को न केवल गुट–निरपेक्ष रहना चाहिये, बल्कि वैसा दिखाई भी पड़ना चाहिये।''

7 – 1980 के बाद गुट–निरपेक्षता – जनवरी 1980 के आम चुनावों के बाद इंदिरा गांधी के पुनः प्रधानमंत्री बनने से विदेश नीति में जो गति आई। उसका प्रभाव सर्वत्र दिखाई पडने लगा। मार्च 1983 में नई दिल्ली में निर्गुट देशों का सम्मेलन आयोजित किया गया। इंदिरा गांधी को अगले तीन वर्षों के लिये निर्गुट आंदोलन का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इंदिरा गांधी की मृत्यु के बाद राजीव गांधी ने दक्षिण–दक्षिण सहयोग को अधिक ठोस रूप देने की आवश्यकता बतलाई।

पी.वी. नरसिंहराव ने आतंकवाद के खिलाफ कड़ा रूख अपनाने का आह्वान सदस्य देशों से किया। वाजपेयी जी ने नाभिकीय परीक्षणों का खुलासा करते हुए नाभिकीय हथियार सम्पन्न राष्ट्रों से अनुरोध किया वे नाभिकीय हथियार अभिसमय पर बातचीत करने के लिये गुट–निरपेक्ष आन्दोलन में शामिल हो। डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिये चरमपंथी ताकतों के विरूद्ध संगठित होना होगा।

वर्तमान संदर्भ में गुट–निरपेक्षता का औचित्य

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की स्थापना की स्थापना के बाद इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद की समाप्ति है, जिसके परिणामस्वरूप एशिया व अफ्रीका के तमाम देश स्वतन्त्रता प्राप्त कर सके। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की समाप्ति में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है। इसके अलावा नवोदित राष्ट्रों के मध्य एकता व सहयोग बढ़ाने, विश्व मंच पर उनके दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने गुटों से दूर रहकर संघर्ष के क्षेत्र को कम करने तथा विश्व शांति को प्रोत्साहित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

1991में सोवियत संघ के विघटन के एवं शीत युद्ध की समाप्ति के उपरांत गुट–निरपेक्ष आंदोलन के औचित्य पर प्रश्नचिन्ह् लगने लगे है।

1971 की भारत सोवियत संघ संधि के कारण भी इस आंदोलन पर सवाल खड़े किये गये है।

वस्तुतः सच्चाई यह है कि गुट–निरपेक्ष का तात्पर्य विदेश नीति की स्वतंत्रता से है तथा इसका मुख्य उद्देश्य सम्प्रभु राष्ट्रों की समानता व उनकी संप्रभुता व अखण्डता को सुरक्षित रखना है। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद द्विधुव्रीय विश्व व्यवस्था की समाप्ति हो गई है लेकिन गरीब व कमजोर राष्ट्रों की सुरक्षा व संप्रभुता की चुनौतियां कम नहीं हुई है। अमेरिका के नेतृत्व में एक –ध्रुवीय व्यवस्था के लक्षण पनप रहे है। पश्चिमी देशों का गुट नाटों अधिक मजबूत हुआ है। यद्यपि भारत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संकट के समय निष्पक्षता व मध्यस्थता की नीति अपनाई गई है, परन्तु यह आलोचना की

जाती रही हैं कि भारत विभिन्न विदेशी स्त्रोतों से सहायता पाना चाहता है फिर भी वह उन देशों के हितों, दृष्टिकोणों तथा स्थितियों का समर्थन नहीं करता, जो उसे विभिन्न प्रकार की सहायता दे रहे है।

गुट–निरपेक्ष आंदोलन ने अफ्रीका, एशिया व लैटिन अमेरिका के विकासशील देशेां के मध्य सहयोग और एकता के मंच के रूप में कार्य किया है। आज भी इन देशों के मध्य आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सहयोग की आवश्यकता है। इस सहयोग को दक्षिण – दक्षिण सहयोग के नाम से जाना जाता है। अतः गुट–निरपेक्ष आंदोलन दक्षिण–दक्षिण सहयोग का एक मंच प्रसतुत करता है।

संदर्भ

1 – अंतर्राष्ट्रीय राजनीति – लेखक – प्रो. बी.एल. फड़िया व डॉ. कुलदीप फड़िया – 22वां संशोधित संस्करण – पेज – 350, 351, 353, 354

2 भारत की राजव्यवस्था – लेखक – एम. लक्ष्मीकान्त अध्याय – 79, पेज – 79.1, 79.2, 79.3

3 – राजनीति विज्ञान – एक समग्र अध्ययन – तृतीय संस्करण लेखक – राजेश मिश्रा,
पेज – 511, 512, 513, 514

4 – भारतीय विदेश नीति – लेखक – जे.एन. दीक्षित, पेज – 320, 321

5 – भारत की विदेश नीति – लेखक एन सुभरमनयम्, पेज नंबर – 52, 53